84. पंचाछ्यसाहात्यं. 85. वैराग्यमाहात्यं. 86. शिवश्रात्त्र्यभेदिव-निर्णयः. 87. योगाचारोपदेशः. 88. सदाचारवर्णनं. 89. प्राय-श्वित्तानुवर्णनं. 90. श्वरिष्टवर्णनं 1. 91. वाराणसीश्रीपतयोमीहात्यं. 92. श्रंथकानुग्रहः. 93. वराहप्रादुर्भावः. 94. नारसिंहं. 95. जलं-धरवधः. 96. विष्णुकृतरुद्रनामसहसं. 97, 98. दक्षमखमण्यनं. 99. कामदहनं. 100. ईश्वरस्वयंवरः. 101. गौरीमहेश्वरिववाहः. 102. विनायकोत्पित्तः. 103. महाकालसंभवे महेश्वरनृत्यकारणं. 104. उप-मन्युसिद्धः. 105. कृष्णपुत्रोपलिन्धः.

Altera pars in folio 203 his distichis incipit:

कृषासुष्पति केनेह सर्वदेवेश्वरेश्वरः ।

वकुमहीस चास्माकं सूत सर्वापिविद्ववान् ॥

सूत उ° । पुरा पृष्टो महातेजा मार्केडेयो महामुनिः ।

स्रंवरीपेण विप्रेंदास्तद्वदामि यथात्र्यं ॥

ा. कोशिककथनं. 2. विष्णुमाहात्स्यं. 3. वैष्णवगीतकथनं. विष्णुभक्तकथनं. 5. (श्रंवरीषस्य माहास्यं.) 6. अलस्सीवृत्तं. विष्णुमाहाल्ये अष्टाख्राद्वाद्शाख्रामाहाल्यं. 8. पद ख्रामंत्र द्रमाहाल्यं. 9. पशुप्रतिपादनं. 10. ईश्वरमाहात्म्यं. 11. देवीमाहात्म्यं. 12. अष्ट-मृत्तिवर्णनं. 13. अष्टमृत्तिविवर्णं. 14. पंचब्रह्मविवर्णं. 15. व्यक्ता-व्याक्तादीश्वरखरूपवर्णनं. 16, 17. ईश्वरमाहात्यं. 18. रुद्रप्रस्तावे पाज्ञपतव्रतविवरणं. 19. मंडलस्यरुद्रचतुर्वेक्कविवरणं. 20. गुरु-शिष्यसंप्रदायः. 21. शिष्पप्रतिष्ठाविधिः. 22. सूर्यपूजाविधिः. 23-25. शिवपूजाविधि: 26. अघोरमंत्रपूजाविधि: 27. विजयाभिषेतः 28. तलापुरुषदानविधि: 29. सुवर्णमेदिनीदानं. 30. बल्पपादपदानं. 31. हेमधातुदानं (Gánesam dánam). 32. लक्ष्मीदानं. 33. ति-लधेनुदानं. 34. प्रत्यक्षगोसहस्रदानं. 35. प्रत्यक्षकत्यादानं सुवर्णवृ-षभदानं. 36. षोडशमहादानं. 37. जीवस्त्राद्धविधि:. 38. लिं-गमाहात्यं. 39. लिंगप्रतिष्ठाविधि:. 40. प्रतिष्ठातंत्रं. 41. अघी-रमाहात्यं. 42. ख° ख्रभिचारक " विधि: 43. यज्ञेश्वरीविद्यामाहात्यं. 44. गायतीमाहास्यं 45. मृत्युं जयविधि: 46. पुराणमाहास्यं

In ultimo capite haec leguntur:
ग्रंथैकादशसाहसं पुराणं लिंगमुत्तमं ।
श्रष्टोत्तरशताध्याययायमंशंमतः परं ।
परचार्वारिशाष्टमाध्यायं धर्मकामार्थमोद्यदं ।

E quibus verbis satis corruptis hoc tamen elucet, his duabus partibus Puránam absolutum esse. De codice Parisiaco cf. Hamilton, p. 29.

Codex sub finem superioris seculi negligenter exaratus est. (Wilson 100.)

## 102.

In hoc volumine duo opera insunt. Lit. Devan. Charta Ind. Foll. 196. Long.  $14\frac{1}{2}$ . Lat. 6.

Foll. 1–125. Linn. 14. Vámanapuráṇam, a Pulastya Náradae traditum. Incipit: त्रैलोक्यराज्यमाछिद्य चलेरिन्हाय यो दरी। नमस्तस्मे मुरेशाय सदा वामनरूपिणी॥ पुलस्त्य चृिषमासी-नमाश्रमे वाग्विदां वरं। नारदं परिपप्रस्र पुराणं वामनाश्रयं॥ कथं भगवता ब्रह्मन्वष्णुना प्रभविष्णुना। वामनत्वं धृतं पूर्वं तत्ममावस्त्र (°chakshva) पृस्तः॥ कथं च वैष्णायो भूत्वा प्रद्वादो दैत्यसत्तमः। त्रिदश्चिपुथे सार्द्वमत्व मे शंश्रयो महान्॥ श्रूयते च द्विजन्नेषण (ṣreshṭha) दस्यस्य दृहिता सती। शंकरस्य प्रिया भाषी वभूव वरविर्णनी॥ किमर्षे वा परित्यज्य श्रशरीरं (sva°) वराणना। जाता हिमवतो गेहे गिरींद्रस्य महात्मनः॥ पुनन्न देवदेवस्य पत्नीत्वमगमस्तुभा। एत द्विहि मे ब्रह्मन् इ. ता.] सर्वविन्तं मतो सि मे ॥ तीर्षानी वैय (१. तीर्षानां चेव) माहात्म्यं दानाना चेव सत्तम्। व्रतानां विविधानीं च विधिमाचस्त्र मे द्विज ॥ एवमुक्तो नारदेन पुलस्त्यो मुनिसन्नमः। प्रोवाच वदती (vadatám) श्रेष्णो नारदे (náradam) तपसो निधि॥ etc.

Cf. Wilson, Vishnupurána, p. XLVII. Capita sunt 95, quorum summarium hoc: 1. Prooemium. Siva quum olim cum uxore nubem domum suam fecisset, Jímútaketu nomen accepit. 2. De Dakshae sacrificio et Satis morte. Siva quum quintum Brahmanis caput abscidisset, ea poena affectus est, ut laeva manu illud gereret (Kapálin)<sup>2</sup>. Sacerdotis caede perpetrata, Nemesis Sivam persequitur, donec Prayágae lavando lustratur. 4. Siva ad ulciscendam uxoris mortem catervas suas creat, iisque Vírabhadram praeficit. Vírabhadra cum deis congressus a Vishņu vincitur. 5. Siva vero omnes deos fugat, Daksham occidit, sacrificium ipsum, quod cervi formam induerat, in coelo persequitur. Ubi ipse variorum siderum compositione repraesentatur (Kálarúpin). De zodiaci signis. 6. Incipit: हुद्भवो ब्रह्मणो योऽसौ धर्मो दिव्यवपु: सदा । तस्य भाषा त्वहिंसा च (दाक्षायणी तस्य भाषा  $\mathbf{B}$ .) $^3$  तस्यामजनयत्सुतौ ॥ हिरं कृष्णं च देवर्षे नरनारायणौ तथा। योगाभ्यासरतौ नित्यं हरिकृष्णौ बभूवतुः ॥ Nara et Náráyana quum in Badarika eremo pietatem austeram exercuissent, Indra ad eos pelliciendos Amorem, deum corpore carentem, delegat. Jam Pulastya, a Nárada rogatus, quem ad modum deus ille corpore privatus esset, res plane inauditas narrat, nimirum eam ob causam relatas, ut cultus Laingici origo, Sivaeque potentia, vel Brahmanem et Vishņum superans, celebrarentur. Hujus capitis pars a Vans Kennedy in libro 'Ancient and Hindu Mythology, p. 297. Anglice versa est.

<sup>&</sup>lt;sup>1</sup> Capita 87—90. a Váyupuránae capitibus 14—19. nec rebus nec verbis multum differunt.

¹ Lege पुलस्तं et paulo post नारदः.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> Haec narratio his verbis incipit: शृगुष्वावहितो भूता कथामेतां पुरातनों। प्रोक्तामादिपुराणे च ब्रह्मणाच्यक्तरूपिणा॥ quibus Brahmapuráṇam laudari vides. Ibi vero de Siva Calvifero nihil tradi videtur, Dakshae vero sacrificium copiose describitur. In capite duodecimo Matsyapuráṇam omnium praestantissimum declaratur.

<sup>&</sup>lt;sup>3</sup> Literis B. C. codd. E. I. H. 241. et 400. significavi.